बदलते परिवेश में भारतीय विदेश नीति

डॉ0 राम कृष्ण सिंह
एसोसिऐट प्रोफेसर : रक्षा एवं स्त्रातेजित अध्ययन विभाग,
श्री गणेश राय स्नाकोत्तर महाविद्यालय डोभी, जौनपुर उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध निबन्ध में बदलते परिवेश में भारतीय विदेश नीति का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध निबन्ध को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में भारत–अमेरिका के बीच सामरिक–आर्थिक सम्बन्ध का विश्लेषण किया गया है। द्वितीय भाग में भारत–जापान के बीच सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय भाग में भारत–चीन सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है और चतुर्थ भाग में भारत और पड़ोसी राष्ट्रों के बीच सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः विदेशनीति, यथार्थवादी, सुरक्षा, आंतकवाद, मनोवैज्ञानिक युद्ध, सामरिक हित।

प्रस्तावना

बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में तत्कालीन प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की परम्परागत विदेश नीति में परिवर्तन करते हुए उसे और व्यवहारिक यर्थाथवादी आयाम प्रदान किया है। मोदी विश्व के तमाम देशों में लगातार दौरा कर रहें हैं। इस दौरों में मोदी ने अपने आपको एक सक्रिय, स्पष्ट और दबंग प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत किया है। बहुत से राजनीतिक और नौकरशाह उनकी शैली को केवल दिखावा मानते है, लेकिन इस आलोचना से उनकी छवि और मजबूत हुई है। मोदी विश्व में जहाँ भी गये उन्होंने लोगों एवं विश्व के नेताओं का ध्यान अपनी और आकर्षित करने में सफलता पाई है, क्योंकि वे आसानी से जनसाधारण से जुड़ने में कामयाब रहे है। उन्होंने स्वदेश एवं विदेश में अपनी एक नई पहचान बनाई है। उन्होंने छोटे एवं बड़े देशों के साथ समानता का व्यवहार करने की वकालत की है। वे भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ एवं मजबूत करने की कोशिश के तहत विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। साथ ही साथ उन्होंने इस बात की हिमायत की है कि ऐसे कार्यों को राष्ट्रीय हितों से समझौता करके नहीं किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा इस बात का ध्यान दिया कि भारत का विश्व के तमाम देशों के साथ बेहतर आर्थिक सहयोग विकसित हो। मोदी ने इसके अलावा क्षेत्रीय सुरक्षा, बातचीत, कारोबार की स्वतन्त्रता, ग्लोबल वार्मिग तथा बौद्धिक सम्पदा अधिकारों जैसे बहुपक्षीय वैश्विक मुददों की तरफ अपनी स्पष्ट राय रखने की कोशिश की है। मोदी सामरिक सम्बन्धों को सन्तुलित करने की कोशिश कर रहे है।

भारत–अमेरिका के बीच सम्बन्धः–

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी पहली अमेरिका यात्रा में उस समय के तात्कालीन राष्ट्रपति ओबामा से बात करके भारत–अमेरिका सन्देह को दूर करने का प्रयास किया। इसके बाद दोनों देश समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करने के लिए सहमत हुए। उनका यह कार्य एक तरह से एशिया में चीन को बढ़ती हुई शक्ति का जबाब था। भारत और अमेरिका के बीच रक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण निर्णय लिया और 2005 के भारत अमेरिका रक्षा सहयोग का नवीनीकरण करते हुए उसे 10 वर्ष के लिए बढ़ा दिया। वर्तमान अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ट ट्रम्प भी इस नीति पर चलने की कोशिश कर रहे है। दोनों देश आतंकवाद का निरन्तर विरोध कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा से भारत और अमेरिका के सम्बन्धों में और मजबूती आयी है, दोनों देशों के बीच कई रक्षा आर्थिक समझौतो पर हस्ताक्षर हुए है। भारत अमेरिका और जापान ने जुलाई 17 में मालावार तट पर विश्व का सबसे बड़ा नौ सैनिक अभ्यास किया है। यह अभ्यास इसलिए जरूरी था क्योंकि चीन निरन्तर भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है।

भारत के प्रधानमंत्री मोदी ने भारत–अमेरिका सम्बन्धों को मजबूत आधार प्रदान करने के लिए जून 2017 को अमेरिका की यात्रा की। मोदी ने अमेरिका उद्योगपतियों को भारत में निवेश करने का आग्रह किया, साथ ही भारत में निवेश अनुकूल नीतियों तथा सरकार द्वारा उठाये जा रहे विभिन्न कदमों जैसे–डिजिटल इण्डिया तथा अर्थिक सुधारों की चर्चा की। मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रपति से मुलाकात

की। दोनों नेताओं ने द्वीपक्षीय क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर सहयोग करने पर बल दिया। इसके बाद भारत अमेरिका ने मालावार तट पर विश्व का सबसे बड़ा नौ सैनिक अभ्यास किया, जिसमें जापान भी सम्मिलित हुआ। अमेरिका एवं भारत अपने हितों की रक्षा के लिए सामरिक एवं आर्थिक क्षेत्र में निरन्तर एक दूसरे को सहयोग दे रहे है। यह सहयोग चीन की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए है।

भारत–जापान सम्बन्धः–

मोदी ओर आर्बे के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध उस समय भी अच्छे एवं मधुर थे जब नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री नहीं थे, इसलिए प्रधानमंत्री बनने के एक ही महिने बाद मोदी ने जापान की यात्रा की मोदी की यात्रा यह दर्शाती है कि जापान का उनके लिए क्या महत्व है। भारत के आर्थिक विकास के लिए जापान एक महत्वपूर्ण साझीदार है। जापान के साथ होते बेहतर सम्बन्धों में मोदी ने हमेशा 'मेक इन इण्डिया' और 3 डी डेमोक्रेसी (लोकतन्त्र) डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी और डिमांड मांग) के मंत्र की वकालत की है। मोदी के ये मंत्र व्यापार के लिए सबसे उपयुक्त है। भारत के साथ जापान के सम्बन्ध जहाँ मधुर हो रहे है, वही यह चीन के लिए अशुभ संकेत है। भारत एवं जापान के साथ मधुर सामरिक एवं आर्थिक सम्बन्ध दोनों देशों के बेहतर भविष्य के साथ–साथ ऐशिया प्रशांत एवं हिन्दमहासागर क्षेत्रों में शान्ति, स्थिरता एवं समुद्धि बढ़ाने के लिए नितान्त अपरिहार्य एवं आवश्यक है। दोनो देशों की यह कार्यवाही मुख्यतः चीन के विरूद्ध है। चीन इस समझौते से परेशान हो गया है। भारत एवं जापान के प्रधानमंत्री ने यह माना कि दोनों देशों के बीच रक्षा उपकरणों एवं प्राद्यौगिकी के हस्तानन्तरण और सहयोग की गुंजाइश है। दोनों ने हवा और पानी में विचरण करने वाले यूरस–2 विमान एक्स उससे जुड़ी प्रौद्यौगिकी के लिए सहयोग पर संयुक्त कार्यदल बनाने की दिशा में प्रगति का स्वागत किया है। में सभी चीजें भारत एवं जापान के सम्बन्ध को और मजबूत आधार प्रदान करते है। मोदी ने दक्षिण चीन सागर और पूर्व चीन सागर में चीन के अधिकार के दावे का विरोध करते हुए कई बार अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय में मंचों पर यह कहा है कि हम अपने चारों ओर 18वीं सदी की विस्तारवादी मानसिकता का देखते है जैसे कि दूसरे देशों पर अतिक्रमण करना, दूसरे के जल में घूसपैठ करना। मोदी का यह वक्तत्व चीन को अच्छा नहीं लगा। इससे यह स्पष्ट है कि मोदी भावात्मक रूप से जापान के ज्यादा करीब है। मोदी की यह नीति अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन से भिन्न है। यही कारण कि जापान अगले पाँच वषों में भारत में 34 विलियन डालर निवेश करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस निवेश से चीन भी होड़ में आने की कोशिश करेगा। भारत एवं जापान के बीच इस तरह की साझीदारी से भारत की आथिक एवं सैन्यक्षमता निश्चित रूप से बढ़ेगी जो भारत के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत–चीन सम्बन्धः–

चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग की भारत यात्रा से काफी उम्मीदें थी, क्योंकि चुनाव के तुरन्त बाद मोदी से सम्पर्क करने वाला पहला देश चीन ही था। यही कारण है कि जब चीन के राष्ट्रपति भारत की यात्रा पर आये तो मोदी ने परम्परा के विरूद्ध उनका स्वागत दिल्ली के बजाय अहमदाबाद को चुना, ऐसा करने का उनका इरादा इसलिए था क्योंकि वे दिखाना चाहते कि गुजरात में चीनी निदेशको ने जो हासिल किया है, उसे शेष भारत तक विस्तृत किया जा सकता है। यह प्रयास कारगार रहा क्योंकि चीन ने गुजरात एवं महाराष्ट्र में 6.8 मिलियन डालर का निवेश करने के लिए सहमत हुआ। दोनों नेताओं ने रक्षा, राजनीतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों को और मजबूत करने पर बल दिया। चीन ने भारत में अगले 5 वर्षों में 20 विलियन डालर निवेश करने पर सहमत हो गया और भारत के बदतर होते व्यापार असन्तुलन के प्रति भारत की चिंता को दूर करने पर बल दिया। लेकिन यह सकारात्मकता वर्तमान समय में एक तरह से भंग हो चुकी है क्योंकि चीन भूटान के डोकलाम और उत्तराखण्ड के चमौली जिले में जुलाई 2017 में अपनी सेनाएं लगा दी है। भारत लगातार चीन की इस कार्यवाही का विरोध कर रहा है। चीन यह दलील दे रहा है कि भारत डोकलाम से अपने सैनिकों हटा ले, नहीं तो इसके परिणाम घातक होगें। भारत को एक तरह से चीन मनोवैज्ञानिक युद्ध के माध्यम से डराने का प्रयास कर रहा है। लेकिन भारत के सैनिक अभी भी डोकलाम में डटे हुए हैं। भारत का यह तर्क है कि चीन का यह कार्य 1912 के समझौते कि विरूद्ध है। भारत ने सीमा पर चीनी घुसपैठ का विरोध करते हुए कहा कि सीमा पर लगातार घटनाएं हो रही है, यह चिंता का विषय है। भारत का मत है कि सीमा पर शान्ति एवं स्थिरता,

आपसी विश्वास एवं बेहतर सम्बन्धों की नींव है, दोनों के द्वारा इसका दृढ़ता से पालन किया जाना चाहिए। हमें सीमा सम्बन्धी विवाद को बातचीत के माध्यम से हल करना चाहिए।

चीन के राष्ट्रपति को इस बात से भी निराशा उत्पन्न हुई है कि 21शवी शताब्दी में समुद्री रेशम मार्ग में शामिल होने के लिए मोदी को राजी नहीं कर सके है। चीन पहले से मालद्वीव एवं श्रीलंका इस सम्बन्ध में समर्थन हासिल कर चुका है। चीन इस परियोजना में काफी निवेश कर चुका है, यदि भारत इसमें शामिल नहीं होता है, तो यह चीन के लिए बहुत फायदेमंद नहीं होगा। चीन लगातार बंग्लादेश–भारत–चीन–म्यांमार (वीसीआईएम) आर्थिक कोरिडोर जिसे चीन निरन्तर बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, इसके लिए मोदी ने सशर्त समर्थन एवं सहायता की पेशकश की है। यह भी चीन के लिए नई चिंता पैदा कर दी है, भारत चीन की हर उस नीति का विरोध कर रहा है। जो उनके हितों के विरूद्ध है। इसलिए चीन निरन्तर भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है।

सामरिक मोर्चे पर भारतीय प्रधानमंत्री इस समय ज्यादा मुश्किलों का समाना कर रहे है। जहाँ भारत–अमेरिका, भारत–जापान, भारत–इजराइल के साथ सामरिक मोर्चे पर सम्बन्ध प्रगाढ़ हो रहे है, वही चीन, पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध निरन्तर कटुतापूर्ण होते जा रहे है। चीन भारत को सामरिक मामलों में घेरने का प्रयास कर रहा है। चाहे वह डोकलाम में हस्तक्षेप हो या पाकिस्तान को सैनिक सहायता देने का मुददा हो, चीन निरन्तर भारतीय हितों के विरूद्ध कार्य कर रहा है, यह भारत के सुरक्षा हितों के खिलाफ है।

21वीं सदी के समुद्री रेशम मार्ग तथा रेशम मार्ग आर्थिक बेल्ट (पश्चिम की ओर) से पूरी तरह से चालू होते ही दक्षिण एशिया में चीन अपना सामरिक विस्तार बढ़ा देगा। इस कार्यवाही से पाकिस्तान बंग्लादेश, म्यांमार, मालद्वीप और श्रीलंका में चीन अपने लिए जमीनी और समुद्री अवसंरचना का लाभकारी ढंग से इस्तेमाल कर सकता है। इस कार्यवाही से भारत के सामरिक हित प्रभावित होगें। अभी जहाँ भारत हिन्दमहासागर में सबसे बड़ी नौ सैनिक शक्ति था उसको चीन चुनौती देने के लिए तत्पर दिखाई दे रहा है। चीन जहाँ तरफ भारत को चुनौती दे रहा है, वही वह दूसरी ओर यह भी चाह रहा है कि भारत समुद्री रेशम मार्ग और आर्थिक कोनिडोर में शामिल हो जाय। इससे विशाल भारतीय बाजार चीनी व्यापार के लिए और खुल जायेगा। इससे चीन को भारत का समर्थन मिल जायेगा, और चीन की विस्तारवादी नीति की जो आलोचना होती है उससे उनकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि सुधर जायेगी।

अन्य पड़ोसी राष्ट्रों से भारत का सम्बन्ध–

बदलते परिवेश में भारत का पड़ोसी राष्ट्रों से सम्बन्ध मधुर एवं घनिष्ट हुआ है। 3 अगस्त 2017 में लोकसभा एवं राज्य सभा में विपक्ष द्वारा वर्तमान भारतीय विदेशनीति पर घेरने पर विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने विपक्षियों को करारा जबाब देते हुए कहा कि वर्तमान में भारतीय विदेशनीति चाहे वह पडोसी राष्ट्रों के साथ हो या अन्य बड़ी शक्तियों के साथ हम अपने आपको मजबूत कर, नई ऊचाई का प्राप्त करने में सफल है। भारत विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी बात मनवाने में सफल रहा है, चाहे वह जी0 20 हो या जलवायु परिवर्तन का शिखर सम्मेलन, हर जगह भारत ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज की है। जहाँ तक पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध की बात है भूटान, बंग्लादेश हमारा विश्वसनीय मित्र है। श्रीलंका से भी हमारी मित्रता प्रगाढ़ हुई है। श्रीलंका के साथ बेहतर होते सम्बन्ध का ही नतीजा है कि उसने चीन द्वारा बनाये जा रहे है पोर्ट में उसे संचालन का अधिकार नहीं दिया है, साथ ही यह भी आश्वासन दिया है कि इससे भारत के हितों के कोई नुकसान नहीं होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17 वर्ष बाद दो बार नेपाल की यात्रा कर द्विपक्षीय सम्बन्धों को मजबूत किया है। चीन के साथ डोकलाम विवाद पर उन्होंने कहा कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है, युद्ध के बाद भी समस्या के समाधान के लिए बात चीत करनी पड़ती है। भारत चीन के साथ डोकलाम विवाद दोनों पक्षों मान्य हल निकालने के लिए बातचीत कर रहा है। सुषमा स्वराज का बयान इसलिए अहम है क्योंकि चीन की तरफ से लगातार युद्ध जैसा महौल बनाया जा रहा है, जब कि भारत इस मुददे को कूटनीतिक बात चीत के माध्यम से सुलझाने की कोशिश कर रहा है। जहॉ तक भारत–पाकिस्तान के सम्बन्ध का सवाल है इस पर सुषमा स्वराज ने भारतीय नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकार की निति साफ है पाकिस्तान जिस दिन आंतकवाद की राह छोड़ेगा, भारत उसी दिन से उससे बात शुरू कर देगा, लेकिन

आंतकवाद और शांतिवार्ता एक साथ नहीं चल सकती है। सुषमा स्वराज प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि भारत मोदी के नेतृत्व में वैश्विक मंच पर एजेण्डा तय कर रहा है। पेरिस जलवायु सम्मलेन और जी–20 समेत कई अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर यह बात साबित हो चुकी है। सुषमा ने कहा कि विपक्ष आज चीनी धुस पैठ ग्वादर और हंवनटोटा पर सवाल उठा रहा है, लेकिन ये सारे मसले काग्रेस के समय के है। वर्तमान सरकार ने उन समस्याओं का समाधान किया है जो उनके समय में पैदा हुई थी। इससे स्पष्ट है कि पड़ोसी राष्ट्रों और वैश्विक मंचो पर भारतीय विदेश नीति अधिक स्पष्ट और यथार्थवादी है। यह बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश के अनुरूप है। भारत अगर ऐसी ही विदेशनीति पर चलता रहा तो निश्चित रूप से अपने सुरक्षा हितों की रक्षा करने में समर्थ होगा।

निष्कर्षः–

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने नेतृत्व सें भारत को एक मजबूत राष्ट्र के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में पेश किया है। विश्व की अधिकांश शक्तियों ने भारत के इस नेतृत्व को स्वीकार किया है। विश्व ने अधिकांश देश भारत के साथ अपने आर्थिक साझेदारी को आगे बढ़ा रहे है। इसके परिणाम स्वरूप भारत, जापान, भारत–अमेरिका, भारत–इजराइल के बीच कई महत्वपूर्ण सामरिक समझौते किये गये। इन समझौते से भारत की स्थाई प्रगति तभी सम्भव है जब भारत इस दिशा में शीघ्रता से आगे बढ़े और कार्यवाही करें। जापान एवं अमेरिका ने भारत में और अधिक निवेश करने की पहल की है। यद्यपि चीन का भी भारत में काफी निवेश हैं, लेकिन डोकलाम में चीनी हस्तक्षेप के बाद दोनों देशों में तनातनी उत्पन्न हो गयी है। ऐसे में चीन के साथ सम्बन्धों में कुछ मुश्किले आ रही है। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के लोगों को अधिक से अधिक स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल की सलाह दी है, इससे चीन का भारत के साथ जो व्यापार है वह प्रभावित हो सकता है। जहाँ तक रूस के साथ सम्बन्ध की बात है तो वर्तमान समय में रूस सामरिक मामलों में भारत का सबसे भरोसे मन्द साथी है। अमेरिका के साथ सम्बन्ध भी प्रगाढ़ हुए है। आर्थिक एवं सामरिक मामलों में भारत और अमेरिका के सम्बन्ध बेहतर हुये है। यह भारत के लिए शुभ संकेत है कि वर्तमान समय में दोनों महाशक्तियों के साथ भारत के बेहतर सम्बन्ध है।

भारत निरन्तर अपने पडोसियों और अन्य राष्ट्रों से द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सम्बन्धों को मजबूत आधार प्रदान करने में लगा है। बदलते परिवेश में भारत यह जानता है कि यदि भारत अमेरिका और जापान के साथ अपने सामारिक सम्बन्धों की ठीक रखेगा तो चीन–भारत के टकराव की स्थिति में भारत को लाभ मिलेगा। भारत को अपने आर्थिक हितों एवं सामरिक हितों को ध्यान में रखकर दक्षिण एशिया में अपनी मजबूत स्थिति का अहसास करना होगा, साथ ही चीन, भारत का ऐसा पड़ोसी है, जिससे भारत किनारा नहीं कर सकता है। भारत को ऐसी स्थिति में अपने दीर्घकालिक हितों को ध्यान में रखकर रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

References :

- China- Pakistan Military Links upset India' financial Times Retrieved 16 May 2016.
- China warns India on south china sea exploration project Archived 24 sept 2011 at the way bark Machine The Hindu 15 sept. 211
- Swarma Singh" china and south Ariea Lencer publication New Delhi - 2013
- के0पी मिश्रा, फारेन पालिसी–आफ इण्डिया पृ0–237–39
- अमिताभ मन्त् एण्ड क्रांति वाजपेयी : इण्डिया चाइना रिलेसन्स इन 21 सेन्चुरी पृ0–25–30
- Chinese troops said to be 2 km inside LAC, build -up on the rise; The India Experts 23 sept. 2014
- Chinese and Indian troops face of in Bhutan bordar dispute" retrieved 10 August 2017via the guardian
- Diplomat Ankit panda, The "what's driving the India -china Standoff at Doklom" The Diplomat Retrieved 2017-18